लोगों को बनाने वाले

(4:29-32)

कई वर्षों की योजना तथा निर्माण के बाद आरलिंग्टन, टैज़्सस में कुछ देर पहले एक बेसबॉल पार्क बनाया गया था। कुछ सप्ताह पहले ही, पुराना बॉलपार्क नये वाले के बिल्कुल पास ही था। उसके पूरी तरह खराब होने के बाद एक समाचार पत्र में उसके नीचे गिरे हुए स्तज़्भों की तस्वीर दिखाई गई। मुझे इस बात से जीवन के मूल सिद्धांत का ध्यान आया कि बिगाड़ने में उतना समय नहीं लगता जितना बनाने में लगता है।

परमेश्वर पौलुस के लिखे गए इन शज़्दों के द्वारा हमें यह सच्चाई याद दिलाता है:

> कोई गन्दी बात तुज़्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उज़म हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो। और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब वैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुज़्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो (4:29-32)।

परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया लोगों को बनाने वाली हो।

पवित्र शास्त्र के हमारे भाग, 4:29-32 में दो क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जो यीशु के जैसा और लोगों को बनाने वाला होने के लिए निर्णायक हैं: हमारी बातें और हमारे काम।

लोगों को बनाने वाली बात

मसीही होने के नाते हमें अपने शज़्दों पर नज़र रखनी चाहिए। अपनी भाषा की रक्षा करने का एक ढंग ''कोई गन्दी बात'' (4:29क) बोलने से बचना है। ''गन्दी'' के लिए यूनानी शज़्द सड़े या खराब भोजन का वर्णन करने के लिए किया जाता था। कुछ सप्ताह पूर्व स्थानीय मण्डली की भोजन सहायता सेवकाई को फूड बैंक से कुछ फल मिले। स्वयं-सेवकों द्वारा ज़रूरतमंदों में बांटने के लिए तैयार किए जाते समय किसी को अधिकतर फल नीचे से कुछ गले हुए लगे। ऊपर से ये दिखाई नहीं देते। एक स्वयं-सेवक ने एक आड़ू काटकर देखा तो वह अंदर पूरी तरह से गला हुआ था। पूरा फल ही खराब था।

हम में से कोई गला हुआ फल अपने मुंह में नहीं रखना चाहेगा। यह सोचकर ही हमें उल्टी आने लगती है; परन्तु परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से हम अपने मुंह से गंदी चीज़ें निकालते हैं। जब कोई घटिया चुटकुला सुनाता है, झूठ बोलता है, या अफ़वाह फैलाता है, तो वह ऐसे घटिया शब्दों का इस्तेमाल करता है, जिन्हें काट डालना चाहिए। वह अपने मुंह में गंदगी आने देता है।

हमारी बातें कैसी होनी चाहिए? पौलुस द्वारा दी गई तीन गाइड लाइनों पर ध्यान दें। *पहले, तो हमारे शब्द दूसरों को बनाने वाले होने चाहिए।* हमें ''आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उज़म हो'' (4:29ख) बोलने की छूट है। मसीही लोगों की बातों से दूसरों का भला होना चाहिए।

दूसरा, हमारी बातें उपयुक्त होनी चाहिए। ये शब्द दूसरों की ''आवश्यकता के अनुसार'' (4:29ग) होने चाहिए। शब्दों का चयन करते समय हमें दूसरों के भले की बात ध्यान में रखनी चाहिए।

तीसरा, हमारे शब्द अनुग्रहकारी हों। बाइबल हमें दूसरों के साथ होने वाली बातचीत का उद्देश्य देती है: ''ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो'' (4:29घ)। परमेश्वर हमारे बोले गए शब्दों के द्वारा अपना अनुग्रह बरसाता है। सुलैमान ने कहा था, ''जैसे चांदी की टोकरियों में सोनहले सेब हों वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है'' (नीतिवचन 25:11)।

आपके शब्द कितने महत्वपूर्ण हैं? पौलुस ने हमें तस्वीर में पवित्र आत्मा की भावनाओं को लाकर इसे समझने में सहायता की: ''और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है'' (4:30)। पवित्र आत्मा अलग-अलग कामों से शोकित होता है। उनमें से एक, ऐसे शब्दों का ऐसा इस्तेमाल करना है जो पवित्र आत्मा की हर बात के विरुद्ध हो। इसका अर्थ यह हुआ कि अपने शब्दों की चौकसी करना बहुत आवश्यक है।

अपने पति या पत्नी से प्रोत्साहित करने वाली बातें करने का फैसला करके आपके वैवाहिक जीवन में ज़्या अन्तर आ सकता है? आपके बच्चों के लिए प्रोत्साहित करने वाले शब्दों की ठोस खुराक ज़्या होगी? दूसरों को दुखी करने वाली ''गंदी'' बातें न करने और केवल एक दूसरे को बढ़ाने के लिए बात करने के कलीसिया के सब सदस्यों के फैसले से ज़्या फर्क पड़ेगा।

लोगों को बनाने वाले कार्य

हमारे प्रचार के अलावा हमारे कामों से भी लोग बनने चाहिए। इसके लिए न केवल दूसरों के प्रति सकारात्मक कार्य करना बल्कि नकारात्मक कार्य करने से इन्कार करना भी शामिल है।

नकारात्मक कार्यों से बचें। मसीही लोगों को चाहिए कि लोगों को हानि पहुंचाने वाले नकारात्मक कार्य को त्याग दें। उन कार्यों तथा व्यवहारों की सूची पर ध्यान दें, जिनके विरुद्ध

पौलुस ने 4:31 में चेतावनी दी:

1. ''कड़वाहट''- कठोरता, जो व्यज़्ति को दूसरों के प्रति चिड़चिड़ा बना देती है
2. ''प्रकोप''- लोगों पर निशाना साधकर अचानक क्रोध का विस्फोट
3. ''क्रोध''- किसी के साथ पुरानी, गहरी शत्रुता
4. ''कलह''- क्रोधी व्यज़्ति का दूसरों पर चिल्लाना
5. ''निंदा''- किसी व्यज़्ति की प्रतिष्ठा गिराने के लिए अफ़वाह फैलाना
6. ''वैर भाव''- किसी को आहत करने के लिए जान बूझकर किया गया कोई प्रयास।

यदि आप अपना घर साफ नहीं करते तो वह गंदा या कूड़ा बन जाएगा। घर को साफ़ रखने का अर्थ कचरा निकालना है। घर को साफ रखने का अर्थ कूड़ा करकट बाहर निकालते रहना है। पौलुस ने हमें कुछ निश्चित कार्यों से पीछा छुड़ाने के लिए कहा ताकि हम अपने जीवनों को भ्रष्ट न करें।

सकारात्मक कदम उठाएं। नकारात्मक कार्यों से बचने की सूची देकर, पौलुस ने तीन सकारात्मक कार्य बताए, जो हमें करने चाहिए:

1. ''कृपाल'' हो-दूसरों की भलाई सोचना और हर सज़्भव उनके भले के लिए कुछ करना।
2. ''करुणामय'' हों-दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति खुला मन और उसका जवाब देने वाला होना।
3. ''क्षमा करने वाले होना''-दूसरों की असफलताओं को ऐसे देखना जैसे आप अपने साथ परमेश्वर का व्यवहार चाहते हैं

चान्स नामक एक आदमी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ, जहां उसके अलावा हर कोई बहिरा था। उसने अपने परिवार को कभी उसके लिए ''हैप्पी बर्थ डे'' का गीत गाते हुए नहीं सुना था। खेलों में उसे अपने पिता की ओर से कभी प्रोत्साहन नहीं मिला था। वह अपने माता-पिता की शांत दुनिया से कुछ कटा हुआ था। उसने तनाव पर सही ढंग से काबू नहीं पाया। वह कुछ ऐसे लड़कों की संगति में चला गया जो शराब पीते और अपना समय यूं ही बर्बाद करते थे। उसने कंघी करना छोड़ दिया और फटी पुरानी कमीज़ और चमड़े के दस्ताने पहनने लगा था। चान्स का भविष्य अच्छा नहीं लग रहा था। परन्तु चान्स एक बड़ी अद्‌भुत मण्डली का सदस्य बन गया। इस बात की चिंता करने के बजाय कि चान्स जवानों को ''खराब'' कर सकता है, उस स्थानीय मण्डली के सदस्य उसका स्वागत करने लगे। वे उससे प्रेम करते और उसे समझने की कोशिश करते थे। वे उसके साथ थे। उन्होंने चान्स की अगुआई विनम्रता से करने की जिज़्मेदारी भी स्वीकार कर ली, चाहे इसका अर्थ कभी-कभी उससे सामना करना भी होता था। जिस मन से उन्होंने उसे सिखाया और जिस बुद्धि से उन्होंने उसके साथ व्यवहार किया, उससे उनके निष्कपट प्रेम का ही पता चलता था।

उनके प्रेमपूर्ण व्यवहार से अंतत: चान्स एक मसीही बन गया। वह अखबार की खबर या जेल का कैदी नहीं बना। अन्तत: उसने एक मसीही विश्वविद्यालय में दाखिला लेकर सेवकाई में बढ़ोतरी की।

चान्स की मण्डली ने वचन तथा कामों से उस तक यह संदेश पहुंचाया जो हर मण्डली को हर व्यज़्ति से कहना चाहिए: ''इस मण्डली का हर सदस्य चाहे वह छोटा हो, या निर्बल या परेशान, महत्वपूर्ण है।''

जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं ज़्या उसमें चान्स जैसे लोग हैं ? ''हां'' में सिर हिलाते हुए उनके चेहरों पर ध्यान दें। उन्हें अपने मन में बसा लें। उनकी तस्वीर बताती है कि परमेश्वर हमें लोगों को बनाने वाले होने के लिए ज़्यों बुलाता है।

सारांश

''लोगों को बनाने वाले'' होने के पौलुस के निर्देशों पर आपकी ज़्या प्रतिक्रिया होगी ? ज़्या आप अपनी बातों को परखेंगे ? ज़्या आप यह सुनिश्चित करेंगे कि आप जो कुछ लोगों से कहते हैं, उससे उनका आत्मिक निर्माण होता है ? ज़्या आप अपने जीवन में स्थानीय मण्डली के वातावरण को मज़बूत तथा सकारात्मक बनाने में सहायता करने को प्राथमिकता देंगे ? हां, हम लोगों को पाप से दूर रखना चाहते हैं, परन्तु सफलता और असफलता के बीच अंतर उनके लिए हमारी सहायता के ढंग से ही हो सकता है।

दो बहुत ही व्यावहारिक सुझाव सहायक हो सकते हैं। *पहला, अपने उदाहरण के लिए यीशु की ओर देखें कि लोगों को बनाने वाले कैसे बनना चाहिए।* सुसमाचार की पुस्तकें फिर से पढ़ना शुरू करें, और लोगों से उसके मिलने के ढंग पर ध्यान दें। *दूसरा, अभी से दूसरों को प्रोत्साहित करने को प्राथमिकता देने का फैसला करें।* कइयों के लिए, प्रोत्साहन के शज़्द स्वाभाविक ही निकलते हैं। हम में से अधिकतर के लिए, सचेत प्रयास तथा अज़्यास आवश्यक है, परन्तु ''लोगों को बनाने वाले'' होने के लिए किया गया हर प्रयास उपयोगी है।